RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 March 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd March 2020

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–सत्रहवां	अंक–ग्यारहवां	मार्च–2020

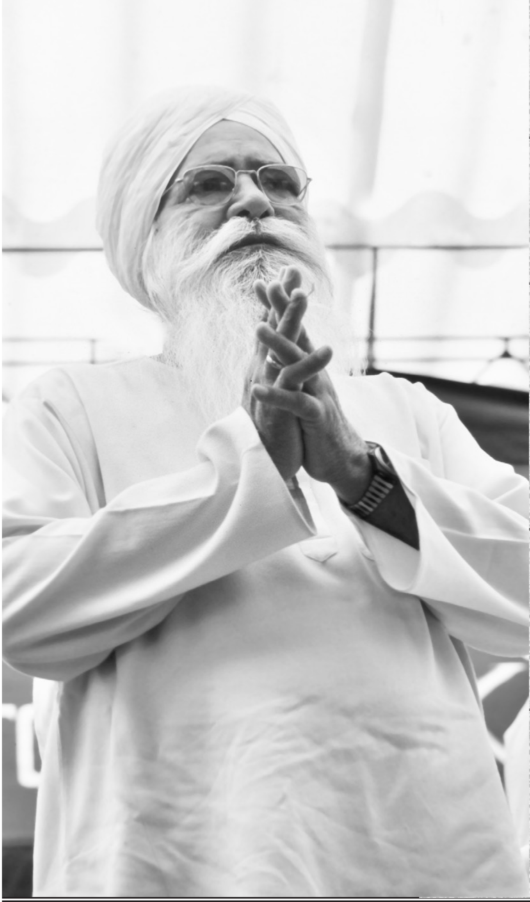

4
एक शब्द
नाम की महिमा अपरम्पार

5
सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी
नाम वीज़ा है

17
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
परमात्मा के बारे में कुछ मीठी-मीठी बातें

25
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले
भजन-अभ्यास

33
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
भाई सुन्दर दास

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी**

सहयोग – **ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 216 Website : www.ajaibbani.org

एक शब्द

नाम की महिमा अपरम्पार

नाम की महिमा अपरम्पार, जावां सतगुरु के बलिहार, (2)

1. पलक झपकते कट जाते हैं, उसके कष्ट कलेश,
जिसके मन मंदिर में रहते, सतगुरु जी हमेश,
और नाम से बड़ा नहीं है, कोई भी आधार,
नाम की महिमा.....

2. नाम जपा कबीर नानक ने, जग में किया उजाला
लेकर प्रभु का नाम पी गई, मीरा जहर प्याला, (2)
नित नियम से करो नाम से, जीवन का श्रृंगार,
नाम की महिमा.....

3. प्रभु से बेमुख रहा जो कोई, उसने जन्म गंवाया,
उसका जीवन सफल हो गया, जिसने नाम ध्याया, (2)
जो भी चढ़ा नाम की नईया, उतर गया भव पार,
नाम की महिमा.....

4. नाम की महिमा नाम ही जाने, यां जिस नाम ध्याया,
अजायब कृपाल के चरनी लग के, कोटि-कोटि यश गाया, (2)
जो भी द्वारे आया गुर के, उसका बेड़ा पार,
नाम की महिमा.....

स्वामी जी महाराज
की बानी

24 जनवरी 1986

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नाम वीजा है

16 पी. एस. आश्रम, राजस्थान

मैं पहले भी आपको यह कहानी सुनाया करता हूँ। आमतौर पर महाराज सावन सिंह जी सतसंग में यह कहानी सुनाया करते थे। ईरान में ख्वाजा हाफिज सिराज मशहूर महात्मा हुए हैं। उन्होंने कहा, ''अगर मुर्शिद कहे कि मुसल्ला शराब में रंग दें तो उसे शराब में रंग देना चाहिए।'' जिस गददी पर बैठकर भजन किया जाता है उसे मुसल्ला कहते हैं। मुसलमानों की पवित्र किताब में शराब पीने की मनाही है।

उस समय न्याय काजियों के हाथ में होता था। किसी ने काजी के पास जाकर कहा कि वह महात्मा यह कहता है , ''मुसल्ले को शराब में रंग दो।'' काजी शरा का कैदी था। काजी ने कहा कि महात्मा कुफ्र बोल रहा है। काजी ने किसी आदमी को उस महात्मा के पास भेजा कि वह इस कलाम को वापिस ले या इसका अर्थ बताए। महात्मा ने कहा, ''परमात्मा ने जो कहा मैंने वह बोल दिया मैं इसे किस तरह वापिस ले सकता हूँ।'' गुरु नानकदेव जी ने भी अपनी बानी में यह कहा है:

ज्यों बुलावे नानक दास बोले।

जिस तरह की बानी धुर दरगाह से मेरे अंदर आई मैंने वह कह दी, यह मेरे बस की बात नहीं।

फिर काजी खुद उस महात्मा के पास गया और उनसे कहा कि आप इसका मतलब बताएं। महात्मा ने कहा, ''इसका मतलब मैं तो तुझे नहीं बता सकता उस पहाड़ी पर एक फकीर बैठा है वह तुझे इसका मतलब बताएगा।'' काजी उस फकीर के पास गया। फकीर ने काजी से कहा कि शहर में एक वेश्या है तू उसके पास जा, वह तुझे इसका मतलब

समझाएगी। मैं तुझे दो रुपये दे रहा हूँ ये तू उसे दे देना। काजी ने सोचा ये कैसे फकीर हैं! एक कहता है कि मुसल्ला शराब में रंग दो और दूसरा कहता है कि वेश्या के पास जाओ। काजी ने सोचा तहकीकात जरुरी है।

जब काजी वेश्या के घर गया तो वह घर पर नहीं थी। जो औरत वेश्या का घर संभालती थी आने-जाने वाले ग्राहक से बातचीत करती थी उसने काजी को देखकर सोचा कि यह ग्राहक बहुत अमीर लगता है इससे बहुत धन प्राप्त होगा यह खाली न चला जाए। उन्होंने एक लड़की खरीदी हुई थी जिसे बहुत प्यार से पाला हुआ था। जब लड़की बीवी वाले कपड़े पहन रही थी तो रो रही थी। उस औरत ने कहा, ''तुझे पता है हम कौन हैं? हमने तुझे इसी काम के लिए पाला है और आज तुझे यह काम करना पड़ेगा।''

उस लड़की को बीवी वाले कपड़े पहनाकर काजी के पास पेश कर दिया। वह लड़की जब काजी के पास गई तो वह बहुत उदास और परेशान थी। काजी ने सोचा अगर यह बीवी होती तो खुशी-खुशी मेरे पास आती बातें करती और हंसती खेलती लेकिन यह तो कोई और ही मामला है। काजी ने उस लड़की से पूछा, ''तू बीवी तो नहीं है मुझे बता कि तू कौन है?'' उस लड़की ने कहा, ''मैं एक विपत्ता की मारी हुई लड़की हूँ। मेरी जिंदगी बहुत पवित्र बीती है लेकिन आज इन्होंने हरामकारी के लिए मुझे तेरे पास पेश किया है। मैं नहीं जानती कि मेरी जिंदगी किस तरह बीतेगी और मुझे क्या-क्या पाप-ऐब करने पड़ेंगे, मालिक की दरगाह में मुझे उन पापों की क्या सजा मिलेगी?''

काजी ने उस लड़की से पूछा कि तेरा कौन सा गाँव है, तू इनके पास कैसे आई? लड़की ने कहा कि मुझे पूरा तो याद नहीं थोड़ा-थोड़ा याद है। मैं छोटी सी थी हमारे गांव में डाका पड़ा, डाकुओं ने सारा गांव लूट लिया हमारा घर-बार भी लूट लिया और मुझे उठाकर ले आए। डाकुओं ने मुझे इनके पास बेच दिया। मुझे थोड़ा-थोड़ा याद है वह फलाना गांव था।

काजी साहब का भी वही गांव था। अपने गांव की लड़की होने की वजह से दिल ने जोश मारा कि और भी तहकीकात की जाए। काजी ने लड़की से पूछा तू जिस मौहल्ले की है क्या तुझे वह मौहल्ला याद है? उस लड़की ने कहा पूरा तो याद नहीं थोड़ा याद है। वह काजी साहब का खुद का मौहल्ला था। मौहल्ले की लड़की होने के कारण दिल में और जोश आया। काजी साहब ने पूछा क्या तू अपने पिता का नाम बता सकती है? लड़की ने कहा कि मेरे पिता का नाम फलाना था। वह नाम काजी साहब का ही था। काजी ने लड़की को गले से लगाकर कहा, ''तू मेरी बेटी है, मैं तेरा पिता हूँ। मैं तुझे इस हरामकारी के काम से छुड़वाकर ले जाऊंगा।''

काजी उस लड़की को लेकर पहाड़ी पर रहने वाले फकीर के पास आया और उसने फकीर से कहा, ''जाहरी तौर पर तो आपका कहना कुछ और था लेकिन आपका मकसद मुझे मेरी खोई हुई बेटी से मिलवाना था।'' महात्मा कहते हैं अगर मुर्शिद आपसे कहता है कि आप मुसल्ले को शराब में रंग दें बेशक यह नाजायज है लेकिन मुर्शिद हर मंजिल का जानकार होता है, उसे हर राज का ज्ञान होता है।

मैं कल सुबह इस घटना का जिक्र करना चाहता था। शाम को भी मेरा काफी विचार था लेकिन पप्पू को जुकाम का बहुत जोर था इसलिए मैंने सब्र से काम लिया। आप सबको पता है कि ग्रुप ने 23 जनवरी को राजस्थान पहुँचना था और 22 जनवरी की रात को दिल्ली के एक होटल में रुकना था। आमतौर पर पप्पू ने कभी अखबार नहीं मंगवाई लेकिन पिछले ग्रुप से यह रोजाना अखबार मंगवाता रहा है।

एक दिन अखबार में खबर छपी कि 23 जनवरी को हरियाणा में बंद का ऐलान किया गया है। किसी किस्म का कोई भी वाहन बस, जीप इत्यादि हरियाणा से नहीं गुजर सकेगी। पप्पू अखबार लेकर मेरे पास आया

और कहने लगा ग्रुप ने 23 जनवरी को आना है लेकिन उस दिन हम हरियाणा से गुजर नहीं सकेंगे, इस समस्या का कोई समाधान खोजा जाए।

आप सोच सकते हैं कि 23 जनवरी की बजाय 24 जनवरी भी कह सकते थे कि एक रात और उस होटल में रुक जाएं लेकिन मुँह से सब कुछ परमात्मा कृपाल ही निकलवाता है। यह सब उसकी ही मेहरबानी थी कि मुँह से यह निकला कि क्यों न ग्रुप एक दिन पहले 22 जनवरी को ही राजस्थान आ जाए। जूडिथ को फोन किया गया, उसी समय दिल्ली भी पत्र लिख दिया गया। आजकल क्रिसमस के दिनों में लोग छुट्टियां मनाते हैं इसलिए जूडिथ को टिकटें बदलवाने में काफी कठिनाई आई।

इस सबके बाद ग्रुप 23 जनवरी की बजाय 22 जनवरी को राजस्थान पहुँच गया, बहुत खुशी हुई। आप जिस होटल में ठहरते हैं 22 जनवरी की रात को 2 बजे उस होटल में बहुत भयानक आग लगी जिसमें 38 आदमी जलकर खत्म हो गए और 45 आदमी मौत से जूझ रहे हैं। अब आप सोच सकते हैं कि परमात्मा कृपाल के बनाए हुए चेहरे मेरे सामने बैठे हैं ये सब उस दुर्घटना में शामिल होते तो मुझ पर क्या बीतती जिसको सहन करना मेरे लिए बहुत मुश्किल होता।

परमात्मा कृपाल की दया को बयान नहीं किया जा सकता। उसने मेरे मुँह से 24 जनवरी निकलवाने की बजाय 22 जनवरी निकलवा दिया। ये सब उसकी दया है मैं उसका तहेदिल से धन्यवाद करता हूँ कि उसने आपको बहुत भयानक दुर्घटना से बचाया है। उस होटल में आग पर 8 घंटे में काबू पाया गया। जब यह हादसा हुआ उस समय सब लोग सोए हुए थे। ज्यादा से ज्यादा विदेशी ही इस हादसे का शिकार हुए। जिसमें कुछ लोग जर्मनी, रशिया और एक–दो आदमी आस्ट्रेलिया के थे।

अब आप सतसंग की तरफ आएं। आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है। आप इस नगरी को दुःखों–सुखों की नगरी

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

कहकर बयान करते हैं। इस नगरी को रोगी कहकर भी बयान करते हैं। यह सारी दुनिया रोगों से ग्रसी हुई है। हम जिंदगी में गमी भी देखते हैं और खुशी भी देखते हैं, यह हमारे पिछले कर्मों का ही नतीजा है। अगर हमारे पिछले अच्छे कर्म हैं तो हम इस देह में बैठकर थोड़ी बहुत खुशी देखते हैं लेकिन जब हमें बुरे कर्मों का हिसाब देना पड़ता है तब हम गमी, बीमारी, बेरोजगारी देखते हैं।

सन्त हमेशा ही कहते हैं अगर आपने सुखों–दु:खों से बचना है तो इस नगरी से ऊपर चले जाएं। यह आत्मा वहाँ की है जहाँ परमात्मा रह रहा है। वह शान्ति और प्यार का देश है, वह मौत–पैदाईश का देश नहीं।

हिन्दुस्तान के कानून हमारे ऊपर तब तक ही लागू होते हैं जब तक हम हिन्दुस्तान के राज्य में रहते हैं। जब हम **वीजा** प्राप्त करके किसी और मुल्क में चले जाते हैं तो हमारे ऊपर उस मुल्क के कायदे–कानून लागू होते हैं। अगर उस मुल्क में शान्ति है तो हमें शान्ति मिलेगी अगर दु:ख है तो दु:ख मिलेगा। **नाम वीजा है**, यह काल की नगरी है हमने नाम का वीजा प्राप्त करना है। सन्त–सतगुरु मालिक की तरफ से **वीजा** देने के लिए काउंस्लर मुकर्र किए होते हैं। सन्तों का देश सच्चखंड है वह सुख और शान्ति का देश है। सन्त हमें वहाँ पहुँचाने के लिए इस नगरी में आते हैं।

तजो मन यह दुख सुख का धाम। लगो तुम चढ़कर अब सतनाम।।
दिना चार तन संग बसेरा। फिर छूटे यह ग्राम।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''पता नहीं इस जिस्म के साथ हमारा कितने जन्मों का संबन्ध है, पता नहीं कब इस शरीर में से आत्मा ने निकल जाना है? अगर हम इसे अपने आप नहीं छोड़ते तो मौत का फरिश्ता इसे जबरदस्ती हमसे छुड़वा देता है। किसी को यह पता नहीं कि मौत कब आनी है, किस जगह आनी है और कैसे आनी है?'' कबीर साहब ने इसे पानी के बुलबुले की तरह मिसाल देकर समझाया है:

पानी केरा बुलबुला इस मानस की जात।

पानी पर हवा पड़ती है तो बुलबुला बन जाता है। हवा निकल जाती है तो बुलबुला पानी बन जाता है। जिस तरह पत्ता पेड़ से टूटकर गिर जाता है तो हवा उसे उड़ाकर ले जाती है। हमारे शरीर की भी यही मुनियाद है। सूफी सन्त फरीद साहब कहते हैं:

जित दिहाड़े धनवरी साहे लए लखाए।
मलक जो कन्नी सुणींदा मुँह दिखाले आए।
जिंद निमाणी कडिए हड्डा कुकड़काए।।

सबसे पहले इस जिंदगी का साहा लिखा जाता है। हिन्दुस्तान का रिवाज है कि माता–पिता ही लड़के–लड़की की शादी का दिन मुकर्र करते हैं। चाहे कितनी भी दिक्कतें आएं फिर भी लड़के वालों की कोशिश होती है कि समय पर लड़की वालो के घर पहुँचकर रीति–रिवाज के मुताबिक लड़की को ले आएं।

फरीद साहब कहते हैं, ''जब आत्मा शरीर में दाखिल होती है तो सबसे पहले इसके साहे का दिन लिखा जाता है। मौत का अजराईल फरिश्ता समय पर आकर अपना मुँह दिखला देता है अगर यह अपने आप जाने की तैयारी नहीं करती तो वह रोम–रोम में से जिंद को खींच लेता है, उस समय बहुत तकलीफ होती है।''

जिंद बहुती मरन वर ले जासी परनाए।
आपण हत्थी जोल के कह गल्ल लग्गी धाए।।

यह जिंद उसकी पत्नी है मौत का फरिश्ता दूल्हा बनकर इसे ले जाएगा अगर हमने पहले से तैयारी नहीं की तो वह इसे जबरदस्ती ले जाएगा। मौत के बाद हमने जिस रास्ते को पार करना है वह रास्ता बाल से भी दस गुना ज्यादा बारीक है। भजन–सिमरन करना हमारी पहले की तैयारी है। मौत का फरिश्ता उन्हें दु:ख पहुँचाता है जो पहले भजन–

सिमरन नहीं करते, सतगुरु का कहना नहीं मानते, नाम नहीं लेते, अपने जीवन को नहीं सुधारते।

धन दारा सुत नाती कहियन। यह नहिं आवें काम।।

यह कहता है कि मेरे इतने बेटे हैं, इतने पोते हैं और इतनी बेटियां हैं। पति कहता है कि यह मेरी पत्नी है। पत्नी कहती है कि यह मेरा पति है। जब मौत आती है,इनमें से किसी ने भी मदद नहीं करनी। मैं कहा करता हूँ:

सतगुरु बाजो कोई न राखा धर्मराज के मंदिर दा।

सतगुरु के बिना कोई भी हमारी आत्मा को काल के पंजे से नहीं बचा सकता। अफसोस से कहना पड़ता है कि हम जितना प्यार दुनिया के पदार्थों से करते हैं उतना प्यार गुरु से नहीं करते। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु सबको चाहे, गुरु को चाहे न कोए।

करोड़ो में कोई विरला ही उठते-बैठते, साँस-साँस के साथ गुरु को चाहता है, कहता है कि मेरा जीवन तेरे हाथ में है। गुरु सबको चाहता है उसकी नजर में कोई अपना-पराया नहीं होता। गुरु की नजर आत्मा पर होती है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर हमें पता लग जाए कि गुरु हमारे लिए क्या करता है? तो हम खुशी में नाच उठें।''

स्वाँस दुधारा नित ही जारी। इक दिन खाली चाम।।

आप प्यार से कहते हैं, ''हमारी देह एक मश्क की तरह है। मश्क में पानी डालने के लिए एक ही सुराख होता है। हमारी देह में दो सुराख हैं। जब साँस ऊपर की ओर जाता है तब भी घटता है और जब साँस नीचे आता है तब भी घटता है।''

मशक समान जान यह देही। बहती आठों जाम।।

सोते समय, चलते-फिरते, उठते-बैठते यह चमड़े का थैला खाली होता रहता है। चौबिस घंटे इसमें से कीमती श्वाँस निकलते रहते हैं।

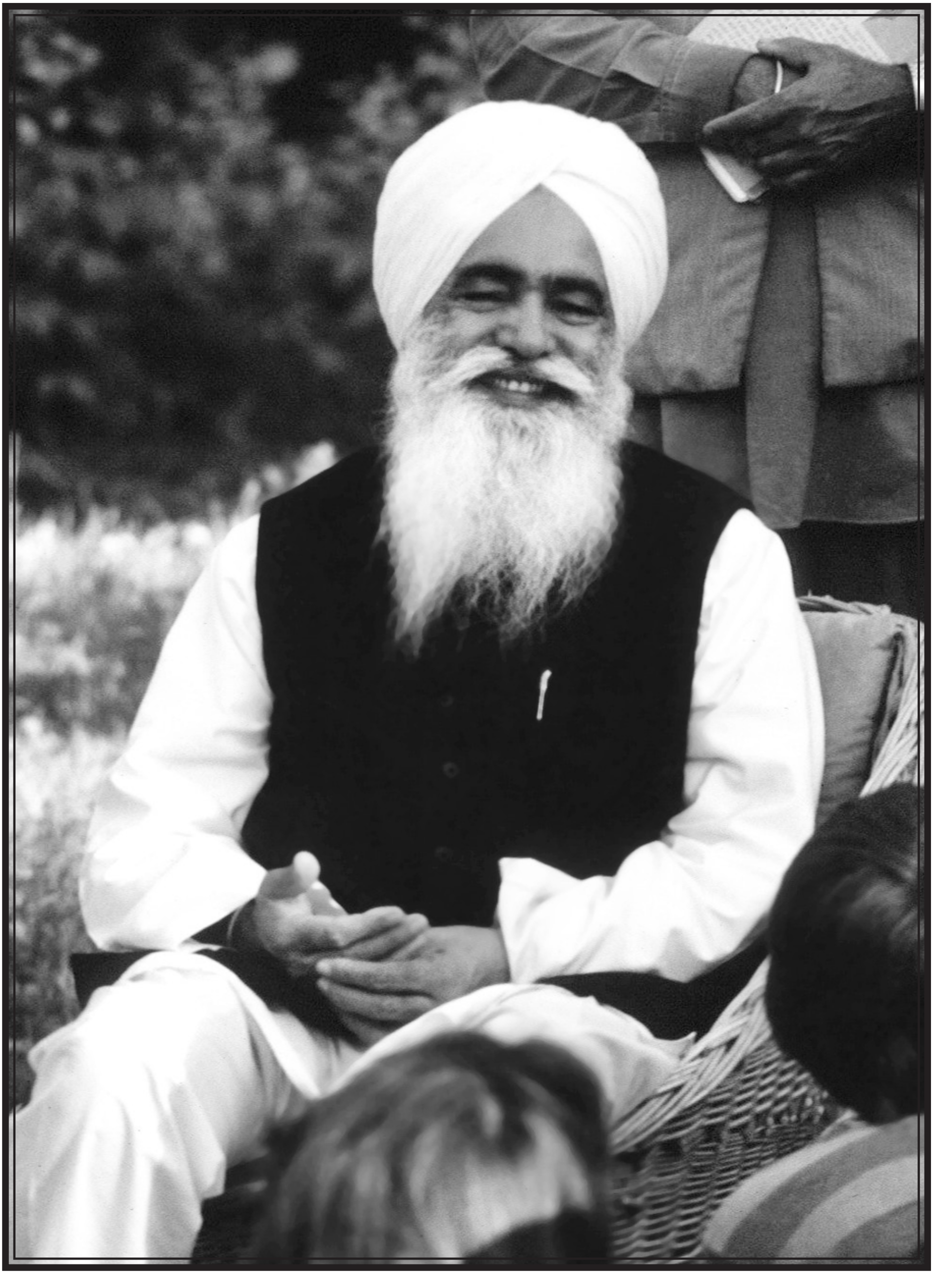

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

तू अचेत गाफिल हो रहता। सुने न मूल कलाम।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''तू दुनिया के पदार्थों में गाफिल होकर अपनी मौत को, आखिरी वक्त को भूल गया है। तेरे अंदर चौबिस घंटे परमात्मा की आवाज आ रही है तू उसे सुन नहीं रहा और उस आवाज की तरफ आकर्षित नहीं हो रहा।''

माया नारि पड़ी तेरे पीछे। क्यों नहिं छोड़त काम।।

आप कहते हैं, ''काल ने मिट्टी की ये मूर्तें बना दी कि यह पति है यह पत्नी है। साथ ही अपना एजेंट मन लगा दिया और उसे समझा दिया कि कोई भी आत्मा गुरु भक्ति न कर पाए, बस! भोगों में ही मस्त हो जाए।'' हम दुनिया के भोगों के आदी हो चुके हैं। पछताते हैं कि फिर नहीं करेंगे लेकिन वक्त आने पर मन फिर धोखा दे जाता है। कबीर साहब कहते हैं:

कामी कबहू न गुर भजे मिटे न संसा मूल।

जिसके दिल के अंदर संशय लगा रहता है कि मैं बुराई कर रहा हूँ वह कभी भी गुरु की भक्ति नहीं कर सकता। नाम की चढ़ाई ऊपर की ओर है और काम की गिरावट नीचे की तरफ है। जिस तरह दिन और रात का मेल नहीं हो सकता उसी तरह कामी आदमी नाम की चढ़ाई नहीं कर सकता। हम एक ही रंग में रह सकते हैं भोगों में पड़कर परमात्मा को भूल सकते हैं या भोगों का रस छोड़कर शब्द–नाम का रस ले सकते हैं।

सन्तों का मकसद किसी के शादी–शुदा जीवन को खराब करना नहीं होता। सन्त शादी को बुरा नहीं कहते। गृहस्थ का मतलब साथी के साथ मिलकर जीवन को सफल और स्वर्ग बनाना है। मिलकर जीवन का सफर तय करना है अगर हम सयंम भरा गृहस्थ व्यतीत करें तो हमें कोई परेशानी नहीं आती। जब हम जरुरत से ज्यादा भोगों में खज्जत हो जाते हैं तब मियाँ–बीवी प्यार खत्म कर लेते हैं और सेहत भी बर्बाद कर लेते हैं।

बिन गुरु दया छुटो नहिं या से। भजो गुरु का नाम।।

आप प्यार से कहते हैं, ''अगर आपने गर्मी से बचना है तो आपको पहाड़ी इलाको में जाना पड़ेगा। इसी तरह अगर विषयों से बचना है तो हमें गुरु की दया प्राप्त करनी पड़ेगी।'' अब सवाल पैदा होता है कि गुरु तो हमेशा ही दया करता है लेकिन सवाल हमारी ग्रहण शक्ति का है कि हम कितनी दया प्राप्त करते हैं।

गुरु का ध्यान धरो हिरदे में। मन को राखो थाम।।

अब आप कहते हैं, ''जब काम का वेग उठता है तब आप अपने आपको गुरु स्वरुप के पीछे छिपा लें। सिमरन करने लग जाएं गुरु की याद में बैठ में जाएं, इस बुरी आदत से बचने का यही एक तरीका है। गुरु की शरण ही एक मजबूत किला है।''

वे दयाल तेरी दया विचारें। दम दम करें सहाम।

आप कहते हैं, ''गुरु स्वरुप हमेशा दयालु है दया करता है। जब आप सिमरन के जरिए सूरज, चन्द्रमा और सितारे पार करके गुरु स्वरुप को प्रकट कर लेंगे तो गुरु आपकी संभाल करेगा। जिस तरह माता बच्चे की संभाल करती है, माता को पता है कि बच्चा अग्नि में हाथ डालेगा तो हाथ जल जाएगा माता बच्चे का हाथ पकड़ लेती है बेशक बच्चा जिद् क्यों न करें।''

अगर हम भी अपने अंदर गुरु को प्रकट कर लेते हैं तो वह हमारी साँस–साँस के साथ संभाल करते हैं। गुरु को पता है कि इसे किस चीज की जरुरत है अगर वह चीज नहीं मिलती तो हम गुरु से नाराज हो जाते हैं। हम नहीं जानते कि उस चीज में हमारा फायदा है या नुकसान है।

छोड़ भोग क्यों रोग बिसावे। या में नहिं आराम।।

स्वामी जी महाराज फिर हमें गफलत की नींद से उठाते हैं कि दुनिया के भोगों का नतीजा रोग हैं, आप इन्हें छोड़ दें।

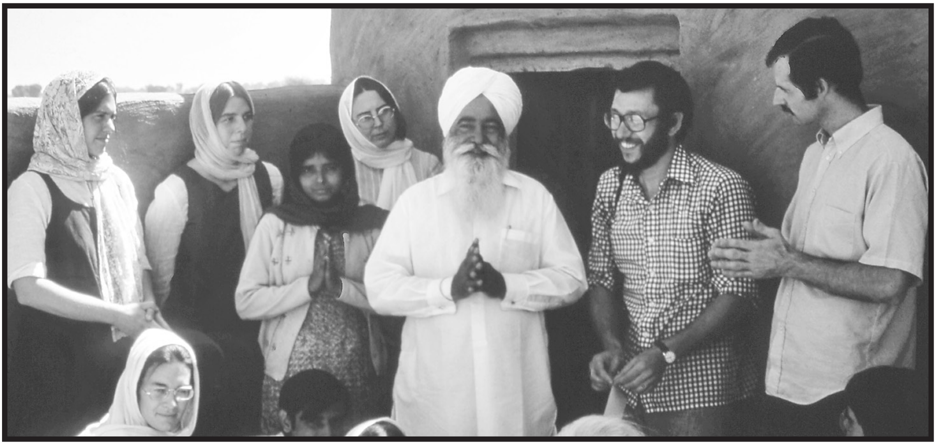

गुरु का कहना मान पियारे। तो पावे विश्राम।।

अब स्वामी जी महाराज प्यार से कहते हैं, ''प्यारेया! गुरु जो कहता है वह कर, तब ही तुझे शान्ति मिलेगी।''

दुख तेरा सब दूर करेंगे। देंगे अचल मुकाम।

जब हम गुरु का हुक्म मानते हैं, गुरु के कहे मुताबिक चलते हैं तो गुरु की जिम्मेवारी होती है कि वह किस तरह हमारा दु:ख काटते हैं। गुरु हमें वह सच्चखंड देते हैं जो प्रलय, महाप्रलय में नहीं गिरता।

राधास्वामी कहत सुनाई। खोज करो निज नाम।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैंने आपको प्यार से समझा दिया है कि हमने किस तरह इस दु:खों की नगरी में से निकलना है। हमें अमूल्य देह मिली है हम अपने श्वाँसो को दुनिया के भोगों में बेफायदा बर्बाद कर रहे हैं। दुनिया के भोगों से रोग लगते हैं, रोग में हम पछताते हैं। क्यों ने हम अंदर जाकर शब्द-नाम को सुनें जो हमें रोगों से बचा सकता है?'

आखिर में आप कहते हैं कि मैं आपको यही नसीहत करता हूँ कि आप गुरु का कहना मानें। गुरु आपका सच्चा हमदर्द और सच्चा मित्र है। आप नाम के साथ जुड़ जाएं, नाम आपकी जिंदगी को सफल करेगा।***

सन्तबानी आश्रम
राजस्थान

29 अक्टूबर 1980

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

परमात्मा के बारे में कुछ मीठी–मीठी बातें

प्रेमी : *परमात्मा हमें कितना प्रेम करता है इस बारे में आप हमें परमात्मा के बारे में कुछ मीठी–मीठी बातें बताएंगे?*

बाबा जी : आज तक इस दुनिया में जितने भी सन्त आए हैं उन्होंने केवल परमात्मा के बारे में ही बात की है। सन्तों ने हमेशा हमें बताया है कि परमात्मा को अपनी आत्माओं से कितना प्रेम है लेकिन हम उस प्रेम का मतलब तभी समझ सकते हैं जब हम उस मंडल तक पहुँचें।

परमात्मा प्यार है। जिस जगह परमात्मा रहता है वहाँ तो प्यार ही प्यार है। इसमें कोई शक नहीं कि इस मंडल पर भी थोड़ा बहुत प्रेम है लेकिन यह प्रेम दुश्मनी और नफरत आदि के साथ मिल गया है। कुछ लोग कहते हैं कि उनमें प्रेम है लेकिन उनका प्रेम पवित्र नहीं।

परमात्मा के हृदय में बहुत ज्यादा प्रेम है तभी परमात्मा इंसानी जामें में आता है। वह हमें बताता है, ''हम उसकी अंश हैं, हमने वापिस अपने असली घर जाना है। आपने मुझसे बिछुड़ने के बाद कई जन्म लिए बहुत दु:ख सहे और मृत्यु का सामना किया। अब मैं तुम्हें वापिस तुम्हारे घर ले जाने के लिए आ गया हूँ।'' वह ऐसा हमारे प्रेम के कारण ही करता है।

सन्त हमें समझाते हैं कि परमात्मा किसी धर्म, देश या समाज की जायदाद नहीं है। चाहे आदमी हो या औरत हो जिसमें प्रेम है, परमात्मा के लिए चाह है वह परमात्मा से मिल सकता है।

जो आत्माएं परमात्मा तक पहुंच चुकी हैं उनमें सबके लिए प्रेम ही प्रेम है। आत्मा परमात्मा की अंश है। जो आत्मा परमात्मा तक पहुँच गई

है वह जानती है कि आत्मा पापों से रहित है लेकिन पाप मन से आते हैं इसीलिए वह मन पर ध्यान नहीं देता, केवल आत्मा पर ध्यान देता है।

जब आत्मा शब्द को सुनती है तब वह शब्द के प्रेम में इतनी मस्त हो जाती है कि नाचना शुरु कर देती है, बिल्कुल वैसे ही जैसे मोर बादलों को देखकर नाचना शुरु कर देता है कि बारिश होने वाली है। इससे पहले आत्मा की हालत उस भेड़ जैसी होती है जिसकी पीठ पर बंदर सवारी कर रहा है, बंदर जहाँ चाहे भेड़ को ले जाता है। आत्मा को पता नहीं होता कि उसे कहाँ ले जाया जा रहा है? आत्मा वहीं जाती है जहाँ बंदर उसे ले जाता है इसी तरह हमारा मन आत्मा पर चढ़ा हुआ है इसलिए हम वहीं जाते हैं जहाँ मन हमें ले जाता है।

एक प्रेमी: *आपने अभी कहा है कि जब आत्मा शब्द की आवाज सुनती है तो वह मस्त हो जाती है ऐसा कब होता है?*

बाबा जी: जब आत्मा थोड़ा सा भी अंदर जाती है, तब वह शब्द को सुनना शुरु कर देती है और मस्त हो जाती है। आप जब भी अपना ध्यान तीसरे तिल पर केन्द्रित करेंगे उस समय आपको मदहोशी महसूस होनी शुरु हो जाएगी। बाहरी दुनिया में जो लोग प्रेम और मदहोशी महसूस करते हैं उसके बारे में कई कहानियां हैं लेकिन जब आप अंदर जाते हैं तो वह अनुभव करने वाला है। आप देखेंगे वहाँ कैसे प्रेम की लौ जल रही है। आप जब उसे अनुभव करेंगे तो आपके पास उस नशे और प्रेम को बयान करने के लिए कोई शब्द नहीं होंगे।

एक प्रेमी: *जिस इलाके में कोई ग्रुप लीडर नियुक्त न हो तो क्या वहाँ के नामलेवा आपस में भजन-अभ्यास के बारे में चर्चा कर सकते हैं?*

बाबा जी: अगर कोई ऐसा इलाका है जहाँ पर कोई ग्रुप लीडर नहीं तो उस इलाके के नामलेवा मुझसे संपर्क करें ताकि वहाँ किसी को ग्रुप लीडर नियुक्त किया जा सके। किसी भी इलाके में सतसंगियों के बीच एक

जिम्मेवार व्यक्ति का होना बहुत जरुरी है। अगर कोई जिम्मेवार व्यक्ति ग्रुप लीडर होगा तो वह सब प्रेमियों को इकट्ठा करेगा और उन्हें गुरु के प्रेम में एक साथ बिठाएगा। गुरु की चर्चा और गुरु की शिक्षा से सब प्रेमियों को फायदा होगा। अगर कोई ऐसी जगह है जहाँ ज्यादा सतसंगी नहीं हैं सतसंगी दूर–दूर रहते हैं और वे सतसंग में हाजिर नहीं हो सकते। ऐसे प्रेमी मुझसे संपर्क करें और वहाँ सतसंग करने की इजाजत ले ताकि उन्हें भी वही फायदा मिले।

एक प्रेमी: *हमारी परिस्थिती ऐसी है जहाँ हम थोड़े से लोगों का छोटा सा ग्रुप है। पहले ऐसा लगता था किसी एक व्यक्ति को ग्रुप लीडर चुना गया तो थोड़ी बहुत अहम पर ठेस पहुँचेगी। फिर मैंने ऐसा सोचा कि हर एक को एक बार बोलने का मौका दिया जाए। मैंने देखा है सभी सतसंगियों में ग्रुप लीडर और दूसरों में थोड़ी बहुत निंदा और खटपटी लगी रही।*

बाबा जी: यह आप सब सतसंगियों ने मिलकर तय करना है। मैं आपको यह राय दूँगा कि एक ही व्यक्ति को ग्रुप लीडर होना चाहिए जो सारे काम की जिम्मेवारी समझे अगर बहुत सारे ग्रुप लीडर होंगे तो कोई भी अपनी जिम्मेवारी नहीं समझेगा।

मुगलों का एक सम्राट अकबर हुआ है। एक बार उसने सोचा कि एक तालाब बनवाया जाए और उसे दूध से भर दिया जाए। अकबर ने अपने राज्य में सबसे कहा कि वे आज रात को एक कप दूध लाएं और उस तालाब में डाल दें। उसने सोचा कि हर कोई एक–एक कप दूध डालेगा तो सुबह तक तालाब दूध से भर जाएगा। सभी लोगों ने सोचा कि मैं जाकर उसमें एक कप पानी डाल देता हूँ बाकी सब तो उसमें दूध डालेंगे इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कोई भी दूध लेकर नहीं गया सब पानी लेकर गए।

इसी तरह अगर आपके पास बहुत सारे जिम्मेवार लोग होंगे तो एक ऐसा समय आ सकता है जब लोग सोचेंगे आज तो दूसरा व्यक्ति पढ़ेगा मैं

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग में क्यों जाऊँ? फिर ऐसा समय भी आ सकता है जब कोई भी सतसंग में नहीं जाएगा और किसी को कोई फायदा नहीं होगा। इसलिए यह राय दी जाती है कि केवल एक ही व्यक्ति ग्रुप लीडर हो और उसकी मदद के लिए उसके पास कुछ साथी हों। अगर एक ही व्यक्ति पर जिम्मेवारी होगी तो वह समय से पहले आएगा, साफ–सफाई करके बिछाई करेगा और सतसंग की तैयारी करेगा।

हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम सतसंग में कहे जाने वाले शब्दों को ध्यान से सुनें और ग्रहण करें। हमारा सतसंग में जाने का मुख्य उद्देश्य गुरु के शब्दों को ध्यान से सुनना और उनका पालन करना है।

मन की यह आदत है कि जब आप सतसंग में जाते हैं तो मन उलझनें पैदा करता है। मैं ऐसी बहुत सी जगहों पर गया हूँ जहाँ लोग उठते और भाषण देते हैं। बहुत से ऐसे लोग होते हैं जो मंच पर जाने के लिए झगड़ा करते हैं । वे सोचते हैं वे उससे अच्छा बोल सकते हैं लेकिन ऐसी मीटिंगों में बहुत कम लोग होते हैं जो चुप होकर बैठते हैं और जो कहा जा रहा होता है उसे सुनते हैं, आपको भी उन लोगों जैसा बनना चाहिए।

एक प्रेमी: *मैंने सुना है कि जो नामलेवा नहीं हैं उन्हें सतसंग से पहले भजन–अभ्यास में नहीं आना चाहिए लेकिन मैंने यह भी सुना है कि वे लोग जो ईमानदारी से नामदान लेना चाहते हैं उन्हें भजन–अभ्यास में आना चाहिए?*

बाबा जी: कई बार ऐसा होता है। जैसे कल सुबह हमने नामदान देना है और जो लोग आज शाम को भजन–अभ्यास में बैठने आते हैं तो हम उन लोगों को भजन–अभ्यास से चले जाने के लिए नहीं कह सकते। कई बार ऐसा होता है कि कुछ लोग अलग–अलग रास्तों से नाम लेकर आते हैं और भजन–अभ्यास में बैठने के लिए पूछते हैं। हमें उन लोगों को भी भजन–अभ्यास में बैठने देना चाहिए क्योंकि ऐसे लोगों को पता होता है

कि अभ्यास कैसे करना है और कैसे दूसरों के भजन–अभ्यास का सम्मान करना है वे कोई अशांति नहीं फैलाते। यहाँ पर एक औरत बैठी हुई है जिसे पिछले ग्रुप में नामदान मिला था। जब तक इसे नामदान नहीं मिला था तब तक इसने किसी भजन–अभ्यास में भाग नहीं लिया था। यह इजाजत उन विशेष लोगों के लिए है जिन्हें किसी और रास्ते से नामदान मिला है। वे सतसंगियों के भजन–अभ्यास में कोई विघ्न नहीं डालते।

एक प्रेमी: *पहले भी बताया गया है कि मौत के समय अगर कोई गैर नामलेवा उपस्थित हो तो सतगुरु अपना प्रकाशमान स्वरुप नहीं दिखाते?*

बाबा जी: आपको अपने दोस्त के साथ बात करने में कोई संकोच नहीं होता आप उसके आगे अपना दिल खोलकर रख देते हैं। अगर कोई आपका दोस्त नहीं है तो आप उसे सब कुछ नहीं बताएंगे कुछ बातें अपने तक ही रखेंगे। अगर मरता हुआ नामलेवा बिना नाम लिए हुए को बताता है कि सतगुरु आ गए हैं तो वह विश्वास नहीं करेगा और कहेगा कि मरने वाला आदमी पागल हो गया है।

ऐसा वाक़्या मुक्तसर में हुआ था। वहाँ पर एक नौं–दस साल की लड़की ने बाबा सावन सिंह जी के दर्शन किए हुए थे। जब वह शरीर छोड़ने लगी तो उसने अपनी माँ से कहा कि पानी का छिड़काव करें सतगुरु मुझे लेने आ रहे हैं। उसकी माँ और उसका भाई नामलेवा थे, उन्होंने लड़की की बात पर भरोसा किया। पड़ोसी और गैर सतसंगी रिश्तेदारों ने कहा कि इस लड़की का दिमाग ठीक नहीं इसलिए यह बकवास कर रही है। उस लड़की की माँ और भाई ने सतगुरु को वहाँ आते हुए देखा लेकिन गैर सतसंगियों ने सतगुरु को नहीं देखा क्योंकि उन्हें भरोसा नहीं था।

अगर कोई नामलेवा शरीर छोड़ रहा है और उसके पास खड़े लोग भी नामलेवा हैं, सतगुरु को मानते हैं अगर वहाँ बेनामलेवा भी मौजूद हैं जो विश्वास नहीं करते तो मरने वाला व्यक्ति चुप करके चला जाता है।

अगर कोई सतसंगी किसी ऐसे सतसंगी से मिलने जाता है जो मर रहा है या बीमार है वह उससे दुनियावी बातें नहीं करेगा। वह सिमरन करेगा और बीमार को भी सिमरन याद दिलाएगा। वह बीमार से पूछेगा तुम्हें सिमरन याद है, क्या गुरु स्वरुप आ रहा है? अगर सतसंगी मौजूद हों तो आत्मा मस्त हो जाती है, वह अंदर जो अनुभव कर रही है वह बताना चाहती है लेकिन गैर सतसंगी इस बात को नहीं मानते।

मैं न्यूयार्क के अस्पताल में एक सतसंगी को देखने गया जो मर रहा था। मैंने उससे पूछा उसकी कोई इच्छा है या उसे कुछ चाहिए? उसकी आत्मा इतनी ज्यादा मस्त और खुश हो गई कि बीमारी के बावजूद भी उसने अपने दोनों हाथों से ताली बजानी शुरु कर दी। उसने कहा कि उसकी कोई इच्छा नहीं है। जब कोई सतसंगी शरीर छोड़ने वाली आत्मा के पास जाता है तो शरीर छोड़ रही आत्मा मस्त और खुश हो जाती है।

एक प्रेमी: *आप कहते हैं कि जब एक सतसंगी मर रहा होता है और वहाँ दूसरा सतसंगी हाजिर होता है तो उसे गुरु स्वरुप दिखाई देता है। क्या यह हर सतसंगी पर लागू होता है या सिर्फ उन पर लागू होता है जिन्होंने आध्यात्मिक तरक्की में कोई मुकाम पा लिया होता है?*

बाबा जी: यह सतसंगी की ग्रहणशीलता पर निर्भर करता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''आप परमात्मा का स्वरुप अपनी ग्रहणशीलता के अनुसार देख सकते हैं अगर हमारा ध्यान गुरु की तरफ नहीं है और हम दुनिया में इधर–उधर भटक रहे हैं तब चाहे गुरु हमारे सामने भी आकर खड़ा हो जाए तो भी हम उसे पहचान नहीं सकेंगे।''

एक प्रेमी: *इसका मतलब यह है कि सतसंगी की मौत के समय दूसरे लोग जो वहाँ मौजूद होंगे वे सतगुरु के स्वरुप को नहीं देख सकेंगे?*

बाबा जी: मैं ऐसा नहीं कहूँगा कि बहुत से लोग गुरु को नहीं देख सकेंगे। जब कोई शरीर छोड़ रहा होता है तो आत्मा की हालत ऐसी होती

है कि उस समय हर कोई चाहता है कि वह सिमरन करे। जब आप सिमरन कर रहे होते हैं तो आपका ध्यान सतगुरु की तरफ होता है।

मुझे आपके देश से कई चिट्ठियां और तार मिलते हैं जिसमें लोग कहते हैं अगर कोई सतसंगी शरीर छोड़ रहा होता है तो जो सतसंगी वहाँ बैठे होते हैं वे देखते हैं कि सतगुरु सतसंगी की आत्मा को लेने के लिए आए हैं। किसी सतसंगी के गैर सतसंगी माता–पिता भी शरीर छोड़ते हैं चाहे वे महसूस न करें या बयान न करें लेकिन वहाँ जो सतसंगी सिमरन कर रहे होते हैं वे गुरु की मौजूदगी महसूस करते हैं।

जो सतसंगी भजन–सिमरन करता है उसके रिश्तेदारों की एक पीढ़ी को भी मुक्ति मिल जाती है। सतगुरु एक महान पावर है जो सतसंगियों के रिश्तेदारों और उनके जानवरों की भी संभाल करता है।

एक प्रेमी: *आप सब्र और शुकर के बारे में कुछ कहना चाहेंगे?*

बाबा जी: हमें हर काम में सब्र रखना चाहिए। दुनियावी कामों में सब्र और शुकर आपकी बहुत मदद करेंगे। जब हम भजन–अभ्यास कर रहे होते हैं अगर हम सब्र रखते हैं तो हमें अच्छे परिणाम मिलते हैं। सतसंगी को हमेशा अपने हाथ से सब्र और शुकर को निकलने नहीं देना चाहिए। **हर किसी को अपने गुरु का शुकर गुजार होना चाहिए, चाहे उसे जो भी मिले क्योंकि जो भी हमारी किस्मत में होगा हमें जरुर मिलेगा।**

***

अगर कोई गलती से भी पेट साफ करने की दवा खा ले तो वह दवा पेट साफ कर देगी। इसी तरह अगर कोई गलती से भी परमात्मा का नाम लेता है तो उसे फायदा जरूर होगा।

–बाबा सावन सिंह जी महाराज–

28 अगस्त 1985

भजन–अभ्यास

हाँ भई! कुलमालिक परमपिता कृपाल ने हमें बहुत सुहावना समय दिया है। इस समय कोई खास गर्मी नहीं बैठने में बहुत दिल लगता है। इंसानी जामा बहुत उत्तम है। हम इसमें प्रभु परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं, यह सब जामों में श्रेष्ठ है। हम इस जामें में प्रभु से मिल सकते हैं, इस जामें की जिम्मेवारियां भी बहुत ज्यादा हैं। इंसानी जामें में सबसे बड़ी जिम्मेवारी परमात्मा को प्राप्त करना है।

मैंने कल आपको सतसंग में बताया था कि आत्मा को रुहानी, जिस्मानी और अस्मानी तीन ताप चढ़े हुए हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के पाँचों साँप हर इंसान को चिपटे हुए हैं। जिस तरह बुखार में कोई और बीमारी लग जाए तो पहले से ज्यादा दु:ख हो जाता है। हमें पैदा होते ही तीन ताप तो पहले ही चढ़े हुए हैं और ये पाँच साँप भी डंक मार रहे हैं, इन्होंने हमें बेहोश किया हुआ है।

इंसान रोज इनके डंक सहता है पछताता है फिर सहता है फिर पछताता है कसमें उठाता है कि मैं आज से इन दुश्मनों का साथ नहीं लूंगा लेकिन इन्हें छोड़ नहीं सकता। इंसानी जामा उत्तम है लेकिन इसमें जिम्मेवारियां निभानी पड़ती हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

आगे पाछे बहो पछताऊँ समय पड़े पर होवत चोरा।

हम आगे पीछे बहुत पछताते हैं लेकिन जो काम हमने करना है वह काम हम नहीं करते। हमारा फर्ज बनता है कि हम हमेशा अपने मन की देखभाल करते रहें। सतसंग का क्या मकसद है और महात्मा ने सतसंग को क्यों जरुरी रखा है? सतसंग में हमें हमारी कमियों का पता लगता

है कि हमारे अंदर क्या कमियाँ हैं और हमारा अभ्यास क्यों नहीं बनता? हमें सतसंग का एक–एक लफ्ज अपने ऊपर लागू करना चाहिए। सन्त हमें सतसंग में जो कुछ कहते हैं क्या हम उस पर अमल करते हैं?

मैंने कल सतसंग में बताया था कि सतसंगी को दो चीजों की जरुरत है एक तड़प और दूसरी मेहनत। अगर तड़प है और मेहनत नहीं करते तो कामयाब नहीं हो सकते अगर मेहनत करते हैं लेकिन तड़प नहीं तब भी हम कामयाब नहीं हो सकते।

मैंने एक दिन सतसंग में बताया था कि मुझे आर्मी में सबसे ज्यादा फायदा हुक्म मानने से हुआ। आर्मी के हुक्म बहुत सख्त होते हैं, वे कहते हैं कि पहले काम करें रिपोर्ट बाद में करें। मैंने आर्मी में अपने अफसरों का हुक्म माना, वे मुझ पर दयालु हो गए थे। उन्होंने मेरी जो ड्यूटी थी उसे खत्म करके कहा, ''तू अपना भजन–भाव किया कर।'' मैं ऑपरेटर था जहाँ कोई खास जिम्मेवारी का काम होता था, वे मुझे वहाँ जरुर भेजते थे।

मेरे अफसरो को यह तसल्ली थी कि हम इसे जिस काम के लिए भेजेंगे यह वह काम जरुर करेगा। जब दुनियावी अफसर आपके काम की इज्जत करते हैं तो आप जिस गुरु परमात्मा की हिदायत के मुताबिक भजन–सिमरन करेंगे तो क्या वह आपके काम की कद्र नहीं करेगा?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिस खेत में मजदूर काम करता है घरवाले को फिक्र है कि मैंने इसे कब खाना देना है, कब छुट्टी देनी है, कब तनख्वाह देनी है? वह बेइंसाफ नहीं होता। जब इंसान इंसान की मजदूरी नहीं रखता तो भगवान किस तरह रख सकता है।''

अगर हम मन को शान्त रखें तो हम चलते–फिरते भी सिमरन कर सकते हैं। शान्त मन से मेरा मतलब यह है कि हम काम करते हुए

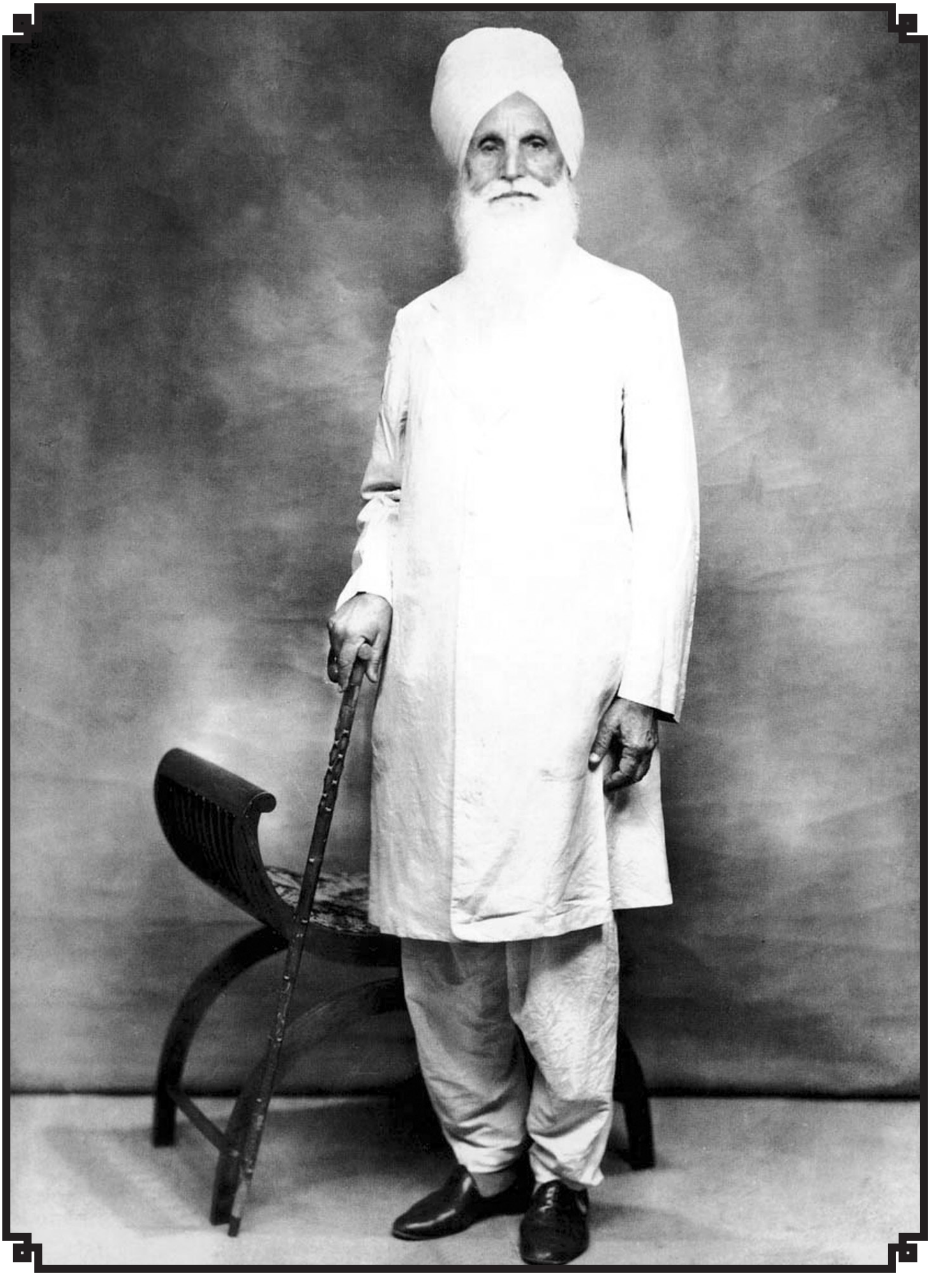

हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज

फिजूल ही दुनिया के संकल्प–विकल्प उठा रहे हैं। आप इन संकल्पो को उठाने की बजाय सिमरन के संकल्प उठाएं, गुरु के संकल्प उठाएं कि गुरु क्या कहता है और सिमरन का क्या महात्व है? सिमरन अपने आप ही शुरु हो जाएगा। आप कई–कई घंटे सिमरन को भूले रहते हैं फिर ख्याल करते हैं कि सिमरन छूट गया है। कभी तो आपका मन कई–कई दिन भी बिना सिमरन के गुजार देता है।

अफसोस से कहना पड़ता है कि बहुत से आदमी जब अभ्यास पर बैठते हैं तो वे पड़ताल नहीं करते। यह जरुर कह देते हैं कि हमने एक घंटा सिमरन में लगा दिया। आप एक घंटे की पड़ताल करें कि उस एक घंटे में आप कितनी बार खुष्क हुए, कितनी बार गुरु से दूर गए।

मैं अपने सिमरन के बारे में बताया करता हूँ कि मेरा आठ घंटे का जाप था। बाबा बिशनदास जी ने कहा, ''कभी पड़ताल भी की है या आठ घंटे दबादब लगा ही रहता है।'' जब मैंने पड़ताल की तो पता चला कि मैं जब जपजी साहब की पाँच पोढ़ियां पढ़ने बैठता था तो शुरु में पंद्रह मिनट और आखिर में सुखमनी साहब के *नानक ऐह गुण नाम सुखमनी* बोलता उस समय पता लगता बाकी के वक्त में आसा जी की वार पढ़नी, पाँच बाणियां पढ़नी, गीता के अध्याय पढ़ने में कई घंटो का जाप था लेकिन पहले के वक्त का पता ही नहीं लगता था कि कहाँ गुजर जाता है। पड़ताल करने से पता चलता है कि आठ घंटे के जाप करने वाले की यह हालत होती है।

महात्मा हमारी कमजोरी को पकड़ लेते हैं इसलिए हमें हमेशा अपने मन की चौंकीदारी करते रहना चाहिए कि हम एक घंटे में कितनी जगह घूमें, कितनी बार सिमरन से जुड़े, कितनी बार फिर बाहर गए। मैं बताया करता हूँ कि आप कभी भी मन के पीछे न जाएं आप जब भी सिमरन में बैठें तब मन की बात न सुनें।

जिस तरह समुंद्र में पानी वाले जहाज होते हैं उनके ऊपर बहुत सारे कबूतर, कौए बैठते हैं; समुंद्र उनका घर होता है। वे समुंद्र में लम्बी–चौड़ी उड़ान भरते हैं लेकिन जहाज कौए और कबूतर के पीछे नहीं जाता। कौए, कबूतर चाहे कितनी भी लम्बी उड़ान भर लें आखिर वे जहाज के ऊपर ही आकर बैठते हैं।

इसी तरह हमारा फर्ज बनता है अगर मन हमारे साथ बात करता है तो इसकी बात न सुनें अगर इस मन की बात सुनेंगे तो यह आपको बाजारों में, खेतो में और रिश्तेदारियों में ले जाएगा। आप मन की बात न सुनें मन के पीछे न जाएं। आखिर यह कहाँ जाएगा आपके पास ही आकर खड़ा हो जाएगा। अगर फिर भी यह नहीं मानता तो आप इसे सजा दें। इसकी सजा क्या है?

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि एक मुसलमान फकीर बाजार से जा रहा था। बाजार में खजूरे बिक रही थी। मन ने जिद् की कि खजूरें खानी हैं। उस फकीर ने अपने मन से कहा कि हम जंगल में जाकर लकड़ियां लाते हैं, लकड़ियां लाकर बाजार में बेची। लकड़ियां बेचकर खजूरें ले ली। बाहर जंगल में जाकर फकीर ने मन से पूछा, ''क्यों भई! खजूरें खानी हैं?'' मन अड़ियल घोड़ा है। मन ने कहा, ''हाँ! खजूरें खानी हैं।''

फकीर ने कहा, ''आज मैं तुझे खजूरें खिलाऊंगा, कल तू जलेबी माँगेगा परसों कोई और चीज माँगेगा बस! मैं तो तेरा ही दास हो गया।'' वहाँ से कोई आदमी जा रहा था, फकीर ने उस आदमी से कहा, ''तू ये खजूरें ले जा।'' आखिर फकीर ने मन का यह सजा दी कि उसे साल भर गर्म पानी पिलाया। अगर हम भी इसी तरह करें!

मैं बाबा बिशनदास जी की मिसाल दिया करता हूँ जब कभी मन उन्हें परेशान करता तो वे उसे भूखा भी रख लेते थे। आप कहते अगर

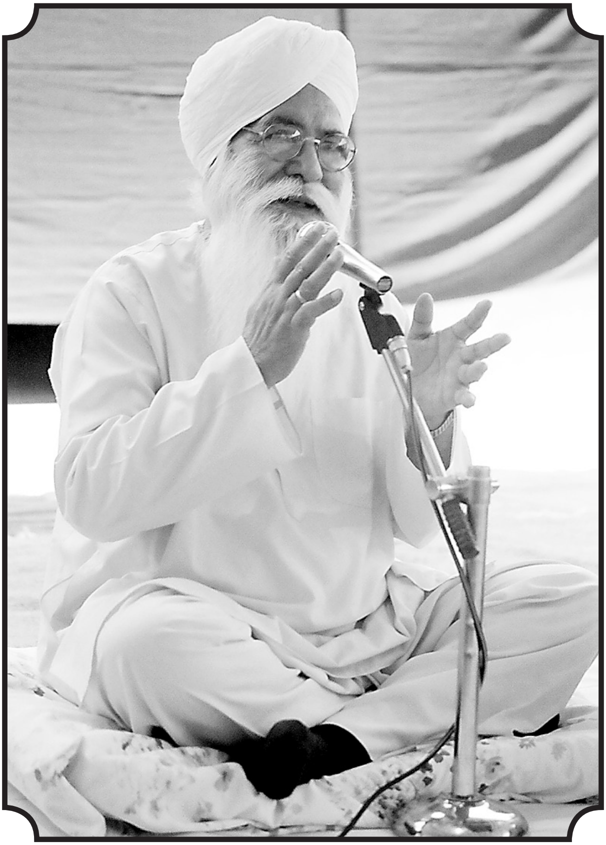

इसे ज्यादा खाने पीने को दूँगा तो यह और परेशान करेगा। कल और ज्यादा माँगेगा। जब मैं पूछता बाबा जी! खाना खाया है? आप कहते:

कुत्ता बद्धा है।

आप मन को कुत्ता कहा करते थे, बाँधने का मतलब है कि यह भौंक नहीं रहा। मन की बकवास बंद करने के लिए सिमरन की जरुरत है, हिम्मत की जरुरत है। आपका गुरु दया करने के लिए हमेशा तैयार रहता है, वह हमेशा दया करता है लेकिन गुरु दया कहाँ करे? जब दया लेने वाला वहाँ नहीं होता।

किसी ने महाराज सावन के पास आकर आपके पैरों को हाथ लगाए, आप उसके ऊपर नाराज हुए। उसी प्रेमी ने कहा, ''महाराज जी! आप दया करें।'' महाराज सावन ने कहा, ''मैं रोज ही दया की टोकरी लिए फिरता हूँ कोई दया लेने वाला नहीं मिलता। मैं जब जाता हूँ उस समय जो अभ्यास में बैठे होते हैं वे ऊंघ रहे होते हैं या बाजारों में फिर रहे होते हैं।''

मेरे कहने का भाव इतना ही है कि मन को शान्त रखें। शान्त मन में संकल्प नहीं उठेंगे। आप इस एक घंटे से फायदा उठाएं। शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है, मन के साथ संघर्ष करना ही अभ्यास है। मन का कहना न मानें। सतसंगी को हमेशा ही ये आदत डाल लेनी चाहिए कि जब वह चलता–फिरता है, उठता–बैठता है तब उसे अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र रखना चाहिए। आपको जो घंटा मिला है आप खुले दिल से इस समय का फायदा उठाएं।

मैं रोज ही बताया करता हूँ कि जिन प्रेमियों को नाम नहीं मिला वे भी दोनों आँखों के दरमियान अपना ध्यान रखें, प्रकाश जरुर आएगा। मुझे खुशी है कि ऐसे काफी आदमी हैं जिन्होंने नाम लेना है वे ठीक अभ्यास करते हैं। लेकिन कई नामलेवा ऐसे भी हैं जिन्हें बैठे–बैठे मन कह लेता है कि कहीं चले न गए हों। वे उठकर चक्कर लगाकर फिर बैठ जाते हैं। मैंने पहले भी कहा था कि आपको आँखें खोलने की जरुरत नहीं, आप अपने काम में लगे रहें।

मेरी एक–एक सतसंगी की तरफ पूरी तवज्जो होती है कि कौन क्या कर रहा है? जब वह देखता है फिर आँखें बंद कर लेता है। आप आँखें बंद करके अभ्यास करें, जब आवाज दी जाए उस समय ही आँखें खोलनी हैं। हाँ भई! बैठें।

***

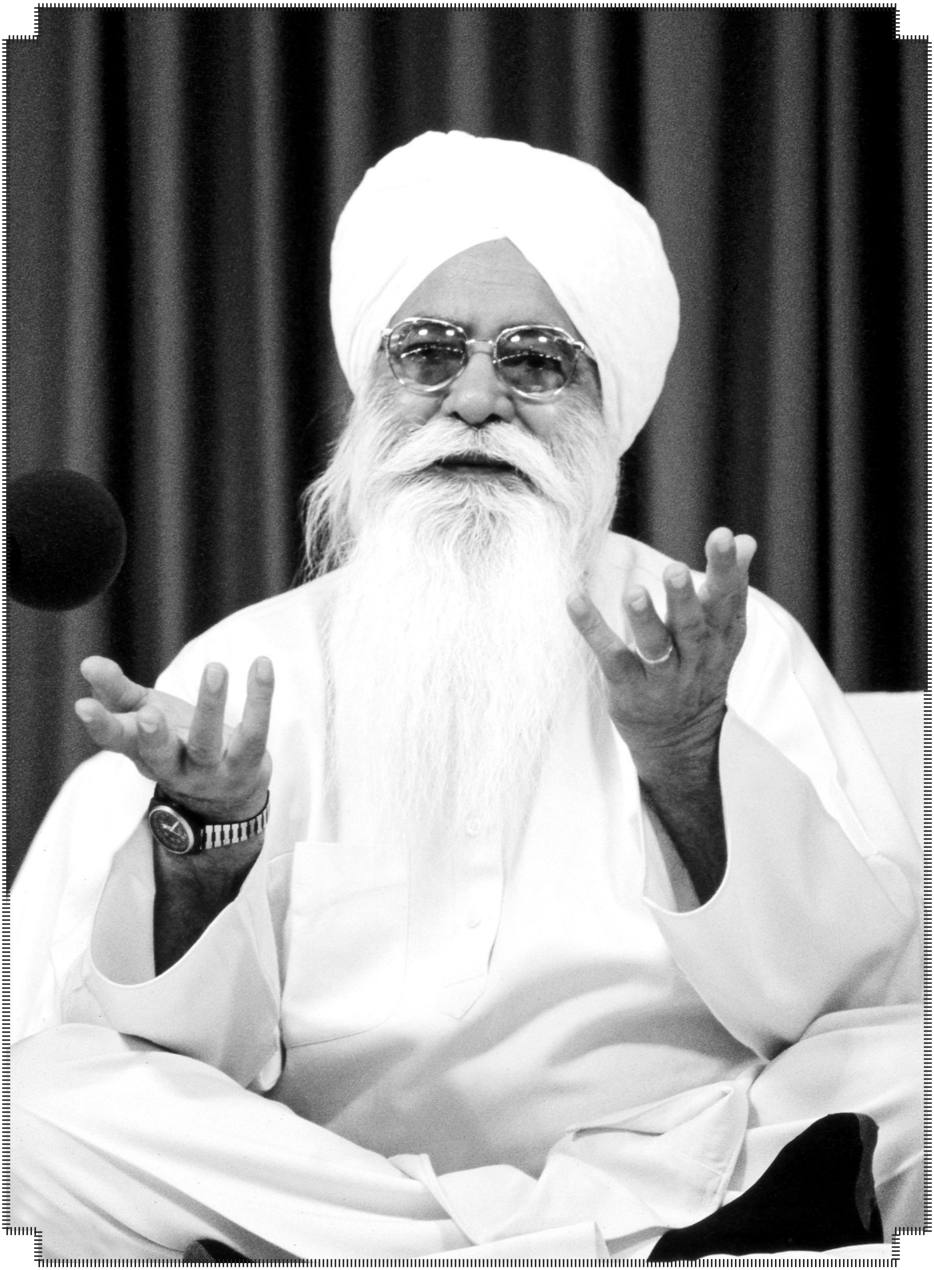

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

भाई सुन्दर दास

मैं कई बार सुन्दरदास की कहानी सुनाया करता हूँ, वह काफी समय मेरे पास रहा। वह महाराज सावन सिंह जी का बड़ा श्रद्धालु नामलेवा था। महाराज सावन सिंह जी ने उसे पहले ही बता दिया था, ''सुन्दरदास!, तेरी घरवाली मर जाएगी तेरा लड़का और लड़की भी मर जाएंगे, तेरा दिमाग हिल जाएगा ऐसी हालत में तुझसे कत्ल हो जाएगा मगर तुझे सच बोलना होगा। तुझे बीस साल की सजा होगी लेकिन तुम छह साल ही सजा काटोगे; मैं खुद तुम्हारी संभाल करुंगा।''

यह सब कुछ ही सुन्दरदास के साथ बीता। उसके घरवाले उसे छुड़वाने के लिए गए और उससे कहा, ''तुम यह कह दो कि मेरा दिमाग खराब है।'' सुन्दरदास ने शिकायत की कि ये लोग मुझसे झूठ बुलवाने की कोशिश कर रहे हैं। एक मुसलमान ने कहा, ''सुन्दरदास तुम यह कह दो कि तुम्हारा दिमाग खराब है।'' सुन्दरदास ने थानेदार से कहा, ''यह मुसलमान मुझसे झूठ बोलने के लिए कह रहा है, मैं झूठ क्यों बोलूँ?''

फरीदकोट के राजा का सुन्दरदास के साथ बहुत प्यार था, राजा ने सोचा कि इस बाबा का बहुत नुकसान हो चुका है इसे छुड़वाया जाए। जब सुन्दरदास जज के सामने पेश हुआ तो जज ने कहा, ''बाबा! तेरे दिमाग में नुख्स है।'' सुन्दरदास ने कहा, ''मैं जपजी साहब पढ़कर सुनाता हूँ आप नुख्स निकालना या आप जपजी साहब पढ़ें में नुख्स निकालूँगा। मेरे दिमाग में नुख्स नहीं आपके दिमाग में नुख्स है। जब मैंने कत्ल किया है तो आप मुझे सजा क्यों नहीं देते?'' सुन्दरदास के बयान के अनुसार जज ने बीस साल की सजा लिख दी।

जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ उस समय सुन्दरदास के छह साल पूरे हो गए थे। इस तरह वह छह साल पूरे करके रिहा हो गया। उसने कहा, ''सतगुरु ने मुझे पहले ही बता दिया था।''

उसके बाद सुन्दरदास बहुत समय मेरे पास रहा। उसने अपनी जिंदगी का आखिरी समय मेरे पास बिताया। जब उसका अंत समय आया उसके कुछ समय पहले ही उसने मुझसे कहा, ''मेरे अंत समय के कपड़े अभी बनवा दें अगर किसी को कुछ अन्न–पानी खिलाना हो तो वह भी खिलवा दें।'' हमने महावारी सतसंग में संगत को अच्छा भोजन दिया सुन्दरदास ने मुझे बताया कि मालिक खुश है।

मैं उसके पास बैठ गया। सुन्दरदास की एक बूढ़ी बहन थी वह बहुत दुःखी रहती थी, वह भी उसके पास ही बैठी थी। सुन्दरदास ने कहा, ''इस समय दरबार खुला है मैं विनती करता हूँ कि यह भी मेरे साथ ही चले।'' मैंने कहा, ''इससे पूछें?'' जब उसकी बहन ने यह बात सुनी तो वह उठकर बाहर चली गई। सुन्दरदास ने शरीर छोड़ने से पहले बताया कि बाबा जयमल सिंह जी, महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल उसे लेने के लिए आए हैं। यह कहकर उसने शरीर छोड़ दिया।

सुन्दरदास के भरोसे के अनुसार उसका अंत समय उसी तरह हुआ। हमने उसे प्यार से स्नान करवाया और कपड़े पहनाकर बिठा दिया। जिन लोगों ने महाराज सावन सिंह जी के दर्शन किए हुए थे उन लोगों ने बताया कि सुन्दरदास की शक्ल महाराज सावन की तरह लग रही थी। सुन्दरदास की नाक भी महाराज सावन सिंह जी की तरह थी और वह दिखने में भी उनके जितना लम्बा था।

***

16 पी.एस. रायसिंहनगर आश्रम में सतसंग का कार्यक्रम

31 मार्च, 01 अप्रैल व 02 अप्रैल–2020